हिन्दी बाल - ग्रंथावली ∴ ∵ प्रथम - श्रेणी ∴ १०

इलाची कुमार

ज्योति-कार्यालय : : अहमदाबाद

हिन्दी बालग्रंथावली प्रथमश्रेणी : : पुष्प १०

इलाची-कुमार

लेखक:
श्री धीरजलाल टोकरशी शाह

अनुवादक:
श्री भजामिशङ्कर दीक्षित

सर्वाधिकार—सुरक्षित

संवत १९८८ | प्रथमावृत्ति | मूल्य डेढ़-आना

प्रकाशक :
ज्योति कार्यालय :
हवेली की पोल, रायपुर,
अ म दा वा द.

मुद्रक :
चीमनलाल ईश्वरलाल महेता.
" व सं त मु द्र णा ल य "
घीकांटारोड :: अ म दा वा द.

इलाची-कुमार

: १ :

ढम, ढम, ढम, ढम, ढोलक की आवाज़ सुनाई देने लगी।

पीं.....ईं, पीं....ईं, पीं.....ईं करके शहनाई भी बजने लगी।

थोड़ी ही देर में, बाँस गाड़े गये और उन पर नट-लोगों की रस्सियें बाँधी जाने लगीं।

"अय भला! अय भला!" का शब्द करते हुए नटलोग उनपर अपना खेल करने लगे।

इलावर्धन नगर के लोग इस खेल को देखने के लिये, नगर के चौक में झुण्ड के झुण्ड एकत्रित होने लगे। इस चौक के नुक्कड़ पर एक सुन्दर-महल बना हुआ था, जिसमें सुन्दर-सुन्दर झरोखे लगे थे, अच्छी-अच्छी खिड़कियें लगी थीं और उस मकान की दीवारें और छतें तो मानों कारीगरी का भण्डार ही हों। धन-धान्य सम्पन्न धनदत्त-सेठ इस महल में रहते थे। इनके एक

जवान लड़का था, जिसका नाम था-इलाची। अपने मकान के नीचे नटों का खेल होते देख, इलाची ने खिड़की में से अपना सिर निकाला।

वहाँ क्या देखा ?

एक नट ने अपने पैर में घुघरू बाँध रखे हैं और दोनों हाथों में एक बाँस लेकर उस रस्सी पर चल रहा है। नीचे नटों का झुण्ड "अय भला ! अय भला !" की ध्वनि कर रहा है। इस झुण्ड में अत्यन्त-सुन्दरी एक नवयुवती--कन्या भी है।

इस कन्या को देखते ही इलाची सिहर उठा और बड़े गौर से उसे फिर देखने लगा। उसने अपने चित्त में यह निश्चित किया, कि यदि मैं अपना विवाह करूँगा तो इसी कन्या के साथ, अन्यथा विवाह ही न करूँगा।

: २ :

भोजन करने का समय होगया, किन्तु इलाची नहीं आया। अतः धनदत्त सेठ ढूँढने निकले कि इलाची कहाँ है ?

उन्होंने जाकर देखा, कि इलाची एक कोने में जैसे-तैसे सोया है और उसका चेहरा बिलकुल उतरा हुआ है।

धनदत्त सेठ ने पूछा—"इलाची ! क्या बात है ? आज तू इतना अधिक उदास क्यों है ?"

इलाची ने सच्चे-दिल से कहा—"पिताजी ! गाँव में नटलोग अपना खेल करने आये हैं। उनके साथ एक जवान कन्या ऐसी है, जिसके रूप का वर्णन नहीं किया जा सकता। आप उसी के साथ मेरा विवाह करवा दीजिये।"

धनदत्त सेठ ने कहा—"पागल ! तुझे यह बुरा-चस्का कहाँ से लग गया ? क्या नटिनी को कभी अपने घर में रखा जा सकता है ? कहाँ अपनी जाति और कहाँ नट की जाति ! अपनी जाति में बहुत-सी कन्याएँ हैं, उनमें से तू जिसे चाहे, उसी के साथ तेरा विवाह कर दूँ।"

पिता के ऐसे विचार सुनकर, इलाची कुछ भी न बोला।

शाम को कुछ खाया, कुछ न खाया और उठ गया। रात्रि के समय नटों को चुपके-से बुलवाया और उनसे कहा कि—"तुम जितना चाहो, उतना धन ले लो, किन्तु तुम्हारी कन्या मुझे विवाह दो"।

नटों ने कहा—"अन्नदाताजी ! हमलोग अपनी कन्या बेंचने को नहीं लाये हैं। धन तो आज है और कल

नहीं। क्या रत्न के समान कन्या यों दी जासकती है? फिर, यदि हम आपको अपनी कन्या दें तो हमारे कुल में दाग लग जाय।

इलाचीने पूछा—"यह किस तरह? मैं तो बनिया हूँ और तुम नट हो, फिर दाग कैसे लग जावेगा?"

नट ने कहा—"सेठजी! आप चाहे जैसे हों, किन्तु आखिरकार हैं तो कायर की ही जाति के और हम चाहे जैसे हों, किन्तु फिर भी साहसी हैं। साहसी-जाति की कन्या कायर को नहीं दी जा सकती।"

इलाची बोला—"किन्तु किसी भी तरह तुम अपनी कन्या का विवाह मुझसे कर सकते हो?"

नट ने कहा—"हाँ, इसका एक उपाय है। तुम भी हमारी ही तरह नट बनो और हमारी विद्या में निपुणता प्राप्त करो। फिर, खेल करके किसी राजा को खुश करो और उससे इनाम प्राप्त करो। उस इनाम की रकम से हमारी जाति की मिहमानी करो, तो हम अपनी कन्या आपको दे सकते हैं।"

इलाची ने कहा—"मुझे तुम्हारी बात स्वीकार है, अवश्य स्वीकार है। मैं, ऐसा ही करूँगा और तुम्हारी कन्या प्राप्त करूँगा।"

: ३ :

रात हुई, सब लोग सो गये। चारों तरफ सन्नाटा-सा छा गया।

इलाची, ऐसे समय में उठा और कपड़े पहनकर तयार होगया। घर या बाहर न तो कोई जाग ही रहा था और न किसी ने करवँट ही बदली।

ज्यों ही उसने बाहर जाने को पैर उठाया, त्यों ही माता—पिता की याद हो आई। उसने सोचा—" अहा, मेरी प्यारी—माता ! प्रेम की मूर्ति पिता ! इन सब को जब यह मालूम होगा, कि इलाची भाग गया, तब कितना दुःख होगा ? अतः मुझे इस तरह से चले तो कदापि न जाना चाहिये ! " यह विचारकर वह ज्यों ही लौटने लगा, त्यों ही उसे दिन को देखी हुई उस नट—कुमारी की याद हो आई। उसने सोचा—" अहा ! कैसा सुन्दर—स्वरूप था ! चाहे जो हो, किन्तु उस कन्या से मुझे विवाह अवश्य करना चाहिये। मा—बाप को थोड़े-दिनों तक दुःख तो होगा, किन्तु फिर सब भूल जायँगे। तो ठीक है, मैं जाकर नट लोगों में मिल जाता हूँ। "

यों सोचकर इलाची चला और नटलोगों के झुण्ड में जा मिला। सबेरे जल्दी उठकर, नटलोग उस नगर से दूसरी जगह चले गये।

: ४ :

इलाची नटलोगों के साथ देश-परदेश भ्रमण करने लगा। उसका सारा वेश इस समय कुछ विचित्र-सा हो गया। बाँस में एक ढोलक बांधकर, उसे अपने हाथ में लेता और अपने कन्धे पर एक कावड़ रखता। इस कावड़ के एक पिटारे में मुर्गे रहते और दूसरे में साज-सामान।

कहाँ बड़े-बड़े महलों और भारी-सम्पत्ति का स्वामी और कहाँ पिटारे में सामान रखनेवाला! कहाँ नौकरों से सब काम करवानेवाला और कहाँ कन्धे पर कावड़ उठानेवाला! किन्तु उसके सिर जो धुन सवार थी, उसके सामने उसे और कुछ भी न दिखाई देता था।

इसी दशा में, बारह-वर्ष व्यतीत हो गये। दोनों प्रेमी-प्रेमिका साथ ही साथ रहते, किन्तु एक दूसरे की तरफ आँख उठाकर भी न देखते। इलाची अब सारी नट-विद्या सीख गया। उसके खेल देखकर, लोग दाँतों तले उँगली दबाते थे। अब उसने विचार किया कि वेणातट नगर जाकर, वहां के राजा को अपने खेल से प्रसन्न करूँ।

: ५ :

अपने साथियों को लेकर, वह वेणातट गया और वहां के राजा से मिला।

राजा ने कहा—"आइये नायक ! तुम्हें देखकर बड़ा आनन्द हुआ। तुम यहाँ अपनी सारी विद्या बतलाओ। यदि तुम अपने खेल से मुझे प्रसन्न कर सके, तो मैं बहुत-बड़ा-इनाम दूंगा।"

इलाची ने खेल की तयारी करना शुरू किया। बाँस गाड़े और उन पर रस्सियां बाँधीं।

इधर, राजा की कचहरी खचाखच भर गई। सब सेठ-साहूकार, नौकर-चाकर तथा छोटे-बड़े और लोग, अर्थात् सारा शहर का शहर खेल देखने को इकट्ठा हो-गया। राजा की सब रानियें भी झरोखों में बैठकर खेल देखने लगीं।

इलाची ने अब अपना खेल शुरू किया। खेल किस तरह करता है ?

वह पहले रस्सी पर चढ़ गया और फिर पैरों में खड़ाऊँ पहनी। एक हाथ में ढाल ली और दूसरे में तलवार। अब रस्सी पर चलने लगा। थोड़ी दूर चलकर, वह पीछे की तरफ को लौट पड़ा। लोग आपस में कहने लगे—"वाह-वाह ! वाह-वाह ! कैसा अच्छा-खेल हो रहा है ?"

इलाची ने, दूसरा खेल शुरू किया। उसने अपने सिर पर सात-बर्तन एक पर एक करके रखे और बाँस की

घोड़ी पर एक लम्बा बाँस बाँधकर उस पर चढ़ गया। नोक पर पहुँचकर वह उस बाँस को जोर से हिलाने लगा। बाँस खूब हिल रहा था, किन्तु इलाची के सिर पर वे सातों–घड़े ज्यों के त्यों रखे थे।

लोग, यह देखकर आश्चर्य चकित रह गये। वे मार्ग देखने लगे, कि राजा इस पर प्रसन्न होकर अब इनाम दें, अब दें, अब दें। किन्तु राजा कुछ भी न बोले।

इलाची ने तीसरा–खेल शुरू किया।

उसने अपने पैरों में कटारें बाँधीं और उन कटारों की नोकके बल रस्सी पर चलने लगा। लोग यह खेल देखकर बड़े प्रसन्न हुए। किन्तु राजा ने अपने मुँह से उसके विषय में एक भी शब्द न कहा।

तो क्या राजाको ऐसे अच्छे–खेल पसन्द नहीं आते थे ?

नहीं–नहीं ! राजा तो इस समय कुछ और ही विचार कर रहा था। उसने, नीचे खड़ी हुई उस नट–कन्या को देखा और उसपर मोहित होकर यों सोच रहा था कि—"यह नट यदि रस्सी पर से गिरकर मर जाय, तो मैं इस कन्या से विवाह कर सकूँ। अतः क्यों

बोलूँ ? खेल करने ही दो, अभी खेल करते करते गिरकर अपने आप मर जावेगा !"

इधर, नट-कन्या नीचे खड़ी-खड़ी विचार करती है, कि—" अहो ! इलाची ने मेरे लिये अपने माता-पिता छोड़ दिये, अपना सुख-वैभव छोड़ा और एक दिन अपने हाथों से वह दूसरों को दान देता था, उसके बदले आज दूसरों से दान लेने को हाथ लम्बा कर रहा है ! अब तो यदि राजा प्रसन्न होकर इसे इनाम दे दें, तभी अच्छा है। मेरे माता-पिता शीघ्र ही इसके साथ मेरा लग्न कर दें और मैं इसके साथ सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करूं।

इलाची ने रस्सी पर से उतरकर राजा को प्रणाम किया। राजा ने कहा—" नटराज ! तुम बड़े चतुर हो, किन्तु मैं तुम्हारा खेल न देख सका। क्योंकि मेरा ध्यान इस समय राज्य के कार्यों की चिन्ता में लगा था।

इलाची फिर खेल करने लगा। नट लोग, जोर-जोर से अपने ढोल बजाने लगे और " अय-भला ! अय—भला ! " की ध्वनि करके उसमें जोश भरने लगे। इलाची ने बड़ा विचित्र खेल किया और फिर नीचे उतरकर राजा को सलाम किया। राजा ने कहा—"नायक? ज्यों ही तुमने खेल शुरू किया, त्यों ही मैं एक जरूरी बात करने

लगा। इसी कारण मैं तुम्हारा खेल नहीं देख सका। तुम फिर एक मर्तबा खेल करो, इस बार मैं ध्यान से देखूँगा।

इलाची तीसरी बार खेल करने लगा। किन्तु राजा फिर भी प्रसन्न नहीं हुआ। राजा के दिल में तो यह पाप घुसा बैठा था कि–"अभी यह किसी तरह गिरकर मर जायगा" फिर भला वह उसकी तारीफ क्यों करने लगा?

इलाची निराश होगया। यह देखकर नट–कन्या ने कहा कि—"इलाची! निराश न हो। थोड़ी–सी बात के लिये सब किया–कराया बिगाड़ना मत। एक बार फिर खेल करके राजा को प्रसन्न करो, नहीं तो हम लोगों का विवाह न हो सकेगा।"

इलाची चौथी–बार रस्सी पर चढ़ा और विस्मय पैदा करनेवाले खेल करके दिखलाये। किन्तु फिर भी राजा प्रसन्न न हुआ।

सब लोगों को यह शक हो गया कि अवश्य ही राजा के पेट में कुछ पाप है। पटरानी को भी यह सन्देह हो गया कि निश्चय ही राजा के मन में कुछ दगा है।

अब इलाची की निराशा का पार न रहा। नट-

कन्या यह देखकर बोली—"इलाची ! एक बार और खेल करो। किनारे पर पहुँचे हुए जहाज को डुबाओ मत, मेरे कहने से और मेरे ही लिये एक बार फिर खेल कर डालो।"

इलाची ने पाँचवीं-बार खेल शुरू किया। वह बाँस की चोटी पर जाकर खड़ा हुआ। इस समय उसे एक दृश्य दिखाई दिया। एक घर के दरवाजे पर सुन्दरता की खान एक स्त्री हाथ में चांदी का थाल लेकर खड़ी है। उस थाल में मिठाई तथा अन्यान्य अच्छी-अच्छी चीजें भरी है। वह, आग्रह कर-करके एक मुनिराज को बहराना चाहती है, किन्तु मुनिराज न तो वह मेवा-मिठाई लेते हैं और न आँख उठाकर उसकी तरफ देखते ही हैं।

यह देखकर, इलाची के हृदय में विचार आया, कि-"अहा ! धन्य है इन मुनिराज को। इनकी जवान-अवस्था है, सामने ही इतनी रूपवती स्त्री खड़ी है, किन्तु उनका एक रोयाँ भी नहीं फरकता। और मैं ! मैं तो एक नटिनी के लिये घर-बार, धर्मध्यान आदि सारी बातें छोड़कर देश-विदेश घूम रहा हूँ ! इन मुनिराज को वह स्त्री आग्रह पूर्वक बहराना चाहती है, किन्तु वे नहीं लेते और मैं दान लेने ही के लिये ज़िन्दगी को खतरे में डालकर, इस बाँस पर चढ़ा हुआ खेल कर रहा हूँ? और

तारीफ यह है, कि यह सब कुछ करने पर भी मुझे दान नहीं मिल रहा है !

सच है, इस मोह में फँसकर, मैंने अपना अमूल्य-समय फिजूल नष्ट किया। अब तो मैं भी इन मुनिराज की तरह साधु होकर इनके जीवन का आनन्द अनुभव करूँ।"

ऐसे विचार करते-करते, इलाची के मन की पवित्रता एक दम बढ़ गई और उन्हें वहीं जगत का सच्चा-ज्ञान अर्थात 'केवल ज्ञान' होगया।

इधर नटिनी भी विचारने लगी कि-"ऐसा स्वरूप आग में पड़े, जिस पर मोहित होकर इलाची ने घर-बार छोड़ा, और इतने दुःख सहन किये। फिर इस राजा को भी उल्टी-बुद्धि सूझी है कि कुछ बोलता ही नहीं, न पुरस्कार ही देता है। अहो ! मेरे इस जीव ने संसार में उत्पन्न होकर कौन-सा अच्छा काम किया ? अब कब तक ऐसा जीवन बिताना चाहिये ? चलो, अब तो मन, वचन और काया को जीतकर मैं अपने आत्मा का कल्याण करूँ।"

ऐसे विचार करते ही करते, उस नटिनी को भी केवलज्ञान हो गया।

राजा-रानी ने, इन दोनों के जीवन में एकाएक भारी-परिवर्तन देखा, अतः उन्हें भी अपने-अपने जीवन

सम्बन्धी विचार उत्पन्न हुए। उन विचारों से, हृदय बिल-कुल पवित्र होते ही, उन्हें भी केवलज्ञान होगया।

ये चारों–केवलज्ञानी, एक लम्बे–समय तक इस संसार में भ्रमण करते रहे। इस काल में, उनके पवित्र–जीवन का, बहुत लोगों पर प्रभाव पड़ा। उनके अमृत के समान उपदेशों से, बहुतों के जीवन पलट गये।

अपना–अपना आयुष्य पूरा होने पर, ये सब निर्वाण –पद को प्राप्त हो गये।

धन्य है इलाची के समान साहसी नर वीरों को!

शिवमस्तु सर्वजगतः

जैन ज्योति

जैन जनताका प्रथम सचित्र कलात्मक मासिक

तंत्री :

धीरजलाल टोकरशी शाह

वार्षिक मूल्य रू. २–८–०] [एक अंक ०–४–०

हिन्दी बाल-ग्रन्थावली

प्रथम-श्रेणी

श्री ऋषभदेव, श्री नेमिनाथ, श्री पार्श्वनाथ, प्रभु महावीर, वीर धन्ना, महात्मा दृढ़प्रहारी, अभयकुमार, रानी चेलणा, चंदनबाला, इलाची कुमार, जंबूस्वामी, अमरकुमार, श्रीपाल, महाराजा कुमारपाल, पेथड़कुमार, विमलशाह, वस्तुपाल-तेजपाल, खेमा देदराणी, जगड़ूशाह, धर्मके लिये प्राण देनेवाले महात्मागण.

द्वितीय-श्रेणी

अर्जुनमाला, चक्रवर्ती सनत्कुमार, गणधर श्री गौतमस्वामी, भरत बाहुबली, आर्द्रकुमार, महाराजा श्रेणिक, वीर भामाशाह, महामंत्री उदायन, महासती अंजना, राजर्षि प्रसन्नचंद्र, मयणरेहा, चंदन मलयागिरि, कान लकड़हारा, मुनि श्री हरिकेशी, कपिलमुनि, सेवामूर्ति नंदिसेन, श्री स्थूलिभद्र, महाराजा संप्रति, प्रभु महावीर के दश श्रावक, स्वाध्याय.

तृतीय-श्रेणी

श्री भद्रबाहुस्वामी, श्री हेमचंद्राचार्य, श्री हरिभद्रसूरि, श्री सिद्धसेन दिवाकर, श्री बप्पभट्ट सूरि, श्री हीरविजयसूरि, उपाध्याय श्री यशोविजयजी, महासती सीता, द्रौपदी, नल-
उदायन, महासती अं
दमयंती, मृगावती, सत्य की जय,
चंदन मलयागिरि, कान लकड़
अस्तेय को महिम की चाबी-
मुनि, सेवामूर्ति नंदिसेन, श्री स्थू
यानी संतोष, जैन ाग १ ला,
महावीर के दश श्रावक, स्व
भा. २, जैन सा
तृतीय-श्रेणी

प्रत्येक श्रेणी का मूल्स्वामी, श्री हेमचंद्राचार्य, श्री वी पी. चार्ज

ज्योति-कार्यालय, हवेली की पोल, रायपुर-अहमदाबाद.